पाठ में से

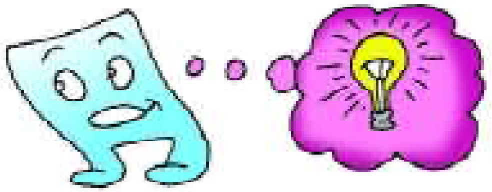

1. राकेश ने नाटक में स्वयं अभिनय क्यों नहीं किया?
2. राकेश के साथी अभिनय के मामले में कैसे थे?
3. राकेश ने प्रदर्शन के दिन सभी को खास-खास हिदायतें फिर से क्यों दीं?
4. राकेश ने नाटक को किस प्रकार सँभाला?
5. इस कहानी के लिए कोई अन्य शीर्षक बताते हुए उसके चुनाव का कारण भी बताइए।
6. **नीचे दिए गए कथन किसने कहे, किससे कहे–**

कथन	किसने कहा	किससे कहा
(क) मेरा दिल तो बहुत ज़ोरों से धड़क रहा है।	....	....
(ख) तुम लोग पानी पियो और मन को साहसी बनाओ।	....	....
(ग) गाजर साहब! आप क्या समझते हैं हमें?	....	....

7. **कहानी के आधार पर नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। सही कथनों पर सही (√) का और गलत कथनों पर गलत (×) का चिह्न लगाइए। गलत कथन को सही करके दोबारा कॉपी में लिखिए–**

(क) राकेश ने नाटक का निर्देशन किया था। ☐
(ख) राकेश के साथी अभिनय के मामले में नए थे। ☐
(ग) राकेश को उनके अभिनय पर पूरा भरोसा था। ☐
(घ) मोहन चित्रकार बना था। ☐
(ङ) राकेश हाथ पर पट्टी बँधवाने के लिए अस्पताल चला गया था। ☐
(च) नाटक का नाम था–बड़ा कलाकार। ☐
(छ) नाटक को बिगड़ता देख दर्शक ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे। ☐
(ज) नाटक का रिहर्सल ही नाटक था। ☐
(झ) सोहन अपना संवाद भूल गया था। ☐
(ञ) राकेश ने मंच पर आकर नाटक को सँभाला। ☐

बातचीत के लिए

1. राकेश को अपने साथियों के किस बुद्धूपन से डर था?
2. क्या आपने कभी नाटक में हिस्सा लिया है? नाटक के मंचन से जुड़ी कोई रोचक घटना बताइए।

अनुमान और कल्पना

1. अगर श्याम अपना संवाद नहीं भूलता तो कहानी कैसे आगे बढ़ती, बताइए।
2. राकेश की जगह यदि आप होते तो नाटक कैसे सँभालते?

भाषा की बात

1. नीचे दिए गए शब्दों को शब्द-कोश के क्रमानुसार लिखिए–

पट्टी, मंच, सार्वजनिक, सप्ताह, पूर्वाभ्यास, पर्दा, स्वयं, संवाद, प्रशंसा, त्रुटि।

....	....	....	....	....
1	2	3	4	5
....	....	....	....	....
6	7	8	9	10

2. पाठ में आए इन युग्म-शब्दों को पूरा कीजिए–

(क) स्वर – .... (घ) साज – ....

(ख) फूल – .... (ङ) लोट – ....

(ग) जैसे – .... (च) पशु – ....

3. नीचे दिए गए शब्दों में से नए शब्द बनाकर लिखिए–

(क) मूर्खतापूर्ण	मूर्ख	....	....
(ख) साधारण	....	....	....
(ग) संगीतकार	....	....	....
(घ) बनाकर	....	....	....
(ङ) कलाकार	....	कला	....

जीवन मूल्य

- राकेश अपने साथियों की मूर्खता के कारण घबरा रहा था। उसे गुस्सा भी आ रहा था और रोना भी।
  1. क्या हम रोकर, घबराकर या गुस्से में किसी मुश्किल परिस्थिति का सामना कर सकते हैं? क्यों?
  2. गुस्से या क्रोध को शांत करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

कुछ करने के लिए

1. **नीचे दिए गए संवादों को अभिनय के साथ बोलिए–**

   (क) देख, मुँह सँभालकर बोल।

   (ख) ओफ! मेरे सिर पर क्यों चढ़े आ रहे हो?

   (ग) हे भगवान! न जाने मेरी बेटी कब ठीक होगी?

   (घ) भई वाह! यह तो अच्छी रही।
2. कहानी 'नाटक में नाटक' को नाटक रूप में खेलने के लिए किस-किस सामान की ज़रूरत होगी? उस सामान की एक सूची बनाइए।
3. 'नाटक में नाटक' शीर्षक कहानी का विद्यालय-मंच पर मंचन कीजिए।

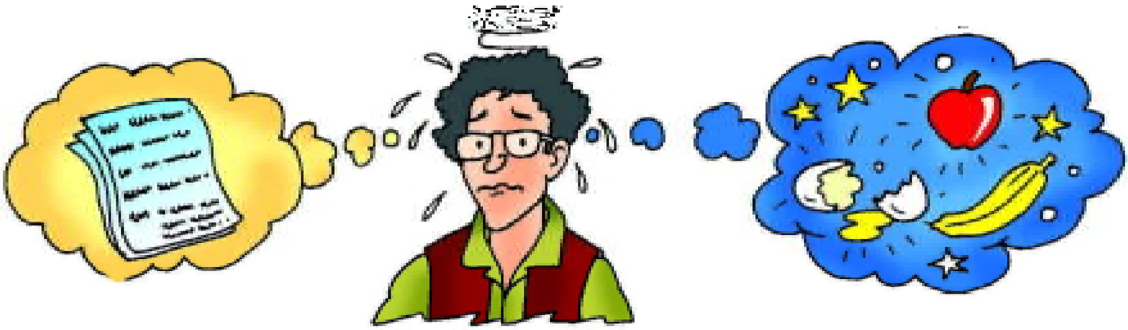

3

निर्मला, साँप और सयाल

निर्मला को अपनी सहेलियों में सयाल लहनू भाई भोया बहुत बुरी लगती थी। सयाल के पिता का नाम लहनू भाई भोया था। सयाल के व्यवहार और गुणों की सभी प्रशंसा करते थे। निर्मला भला सयाल की तारीफ़ कैसे सह पाती! लोग सयाल की माँ से कहते–''कलगी बेन, तुम्हारी लाडली बड़ी होनहार है। उसकी प्यारी-सी मुसकान सबको खुश कर देती है।'' 'प्यारी-सी मुसकान' निर्मला चिढ़कर बुदबुदाती, ''हुँह...दाँत निकाले रहती है और लोग कहते हैं– प्यारी-सी मुसकान।''

लेकिन निर्मला मन-ही-मन यह तो मानती है कि सयाल की मुसकान बहुत प्यारी है। जब वह हँसती है तो उसका अंडाकार चेहरा खिल उठता है। आँखों में चमक आ जाती है। उसकी छोटी, पतली नाक ऊपर को उठ जाती है और उसके गालों में दो छोटे-छोटे गड्ढे दिखने लगते हैं।

सयाल की मुसकान तो मोहक थी, किंतु उसकी पोशाक उतनी आकर्षक न थी। **पैबंद** लगे कपड़ों से उसकी गरीबी झाँकती थी। उसके हाथ में पड़ी चूड़ियाँ भी उतनी सुंदर न थीं, जितनी निर्मला की चूड़ियाँ थीं। यह भी सच है कि गुजरात के उस छोटे-से आदिवासी गाँव बरटाड में इतनी सुंदर गले की माला किसी और के पास न थी जैसी निर्मला के पास थी।

शब्दार्थः पैबंद–दूसरे कपड़े के टुकड़े

सयाल बुद्धि और **विवेक** में भी निर्मला से आगे है। निर्मला इसलिए भी सयाल से चिढ़ती है। सयाल को स्कूल जाना अच्छा लगता है और निर्मला हरदम इस मौके की ताक में रहती है कि स्कूल छोड़कर खेतों में जाने को मिल जाए। ''निर्मला..निर्मला!'' झोपड़ी के अंदर से उसकी माँ पुकारती है।

''अरे आठ बज गए, धूप चढ़ आई और **मवेशियों** को चराने ले जाने वाला कोई नहीं है। जा बेटा, जा। आज तू चरा ला। स्कूल किसी और दिन चली जाना।''

निर्मला खुशी से उछल पड़ी और मवेशियों को हाँकते हुए गाँव के धूल भरे रास्ते पर चल पड़ी।

कुछ **फर्लांग** की दूरी पार करने के बाद निर्मला जंगल की ओर मुड़ गई। वहाँ कुछ ही दूरी पर थोड़ी-सी खुली हुई जगह थी, जहाँ मवेशी आराम से चराए जा सकते थे।

अचानक ही वह ज़ोर से गुस्सा होकर बड़बड़ाई। कारण यह था कि जिस बरगद के पेड़ की छाया में उसका अड्डा था वहाँ आज कोई बैठा था। पेड़ के तने से टिकी पीठ देखकर ही वह समझ गई कि वह सयाल है।

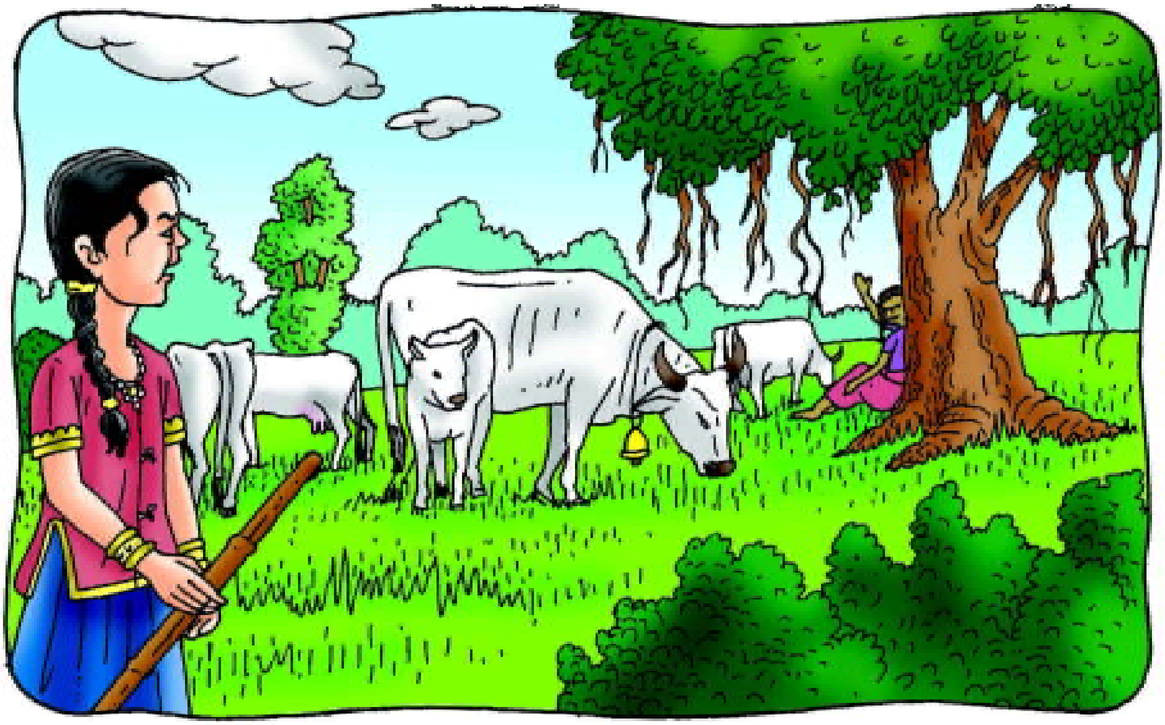

गायों की घंटियों की आवाज़ सुनकर सयाल ने इधर-उधर देखा। वह निर्मला को देखकर बहुत खुश हुई और हाथ हिलाकर उसे बुलाने लगी–''ए निर्मला...इधर आ जा...छाया में।'' लेकिन सयाल की **उपेक्षा करती** हुई निर्मला थोड़ी आगे निकल गई।

निर्मला के मवेशी नरम घास खोजने के लिए बिखर गए। निर्मला इधर-उधर देखकर सोचने लगी कि वह किधर जाकर बैठे। आखिर उसने एक झाड़ी देखी, जिसकी छाया में वह बैठ सकती थी। वह घुटनों के बराबर ऊँची घास के बीच में से होती हुई वहाँ पहुँच गई।

शब्दार्थः **विवेक**–भले-बुरे की समझ; **मवेशी**–गाय, बैल, आदि; **फर्लांग**–दो सौ बीस गज; **उपेक्षा करना**–ध्यान न देना

निर्मला को एक बार फिर सयाल ने पुकारा, लेकिन निर्मला ने उस ओर कोई ध्यान न दिया।

'फुस्स...स...स...';

अचानक यह फुफकार सुनकर निर्मला के **प्राण सूख गए**। उसने मुड़कर देखा—एक दैत्याकार अजगर साँप उसकी ओर जलती आँखों से घूर रहा था। वह बारह फ़ीट से भी ज़्यादा लंबा था। वह निर्मला के इतने नज़दीक था कि वह वहाँ से भागने का साहस भी न कर सकी। वह चीखना चाहती थी, पर भय के कारण उसकी **घिग्घी बँध** गई थी।

अचानक साँप उछला। वह बड़े गुस्से से फिर फुफकारा। निर्मला ने अपनी ज़िंदगी में ऐसा भयानक दृश्य न कभी देखा था न कभी सुना था। अचानक अजगर का सिर आगे को बढ़ा और साथ-ही-साथ उसने पूँछ भी उठाई। पलक झपकते ही निर्मला का घुटना उसकी कुंडली में फँस चुका था और उसने अपने जबड़ों से निर्मला का पंजा पकड़ लिया था। साँप की सख़्त पकड़ से निर्मला को लगा कि उसकी हड्डियाँ चूर-चूर हो जाएँगी। उसे लगा कि अब वह मर जाएगी। वह एकदम से चिल्ला पड़ी—''बचाओ...बचाओ...।''

निर्मला ने साँप को झटकारने की कोशिश की, लेकिन उसे छूने की भी हिम्मत न कर सकी। साँप उसके पैर में कुंडली मारकर लिपटा हुआ था। अचानक साँप पर किसी ने लाठी से वार किया।

यह हमला सयाल ने किया था। साँप गुस्से से तिलमिला उठा। फिर भी उसने अपनी पकड़ न छोड़ी।

''सयाल...सयाल...मैं मर रही हूँ।''

''कुछ नहीं होगा। घबराओ नहीं,'' सयाल चिल्लाई और बड़ी **निर्भीकता** से साँप की कुंडली खोलने की कोशिश में लग गई।

शब्दार्थः प्राण सूख जाना—बहुत डर जाना; **घिग्घी बँधना**—गले से आवाज़ न निकालना (डर के कारण); **निर्भीकता**—निडरता, भयहीनता

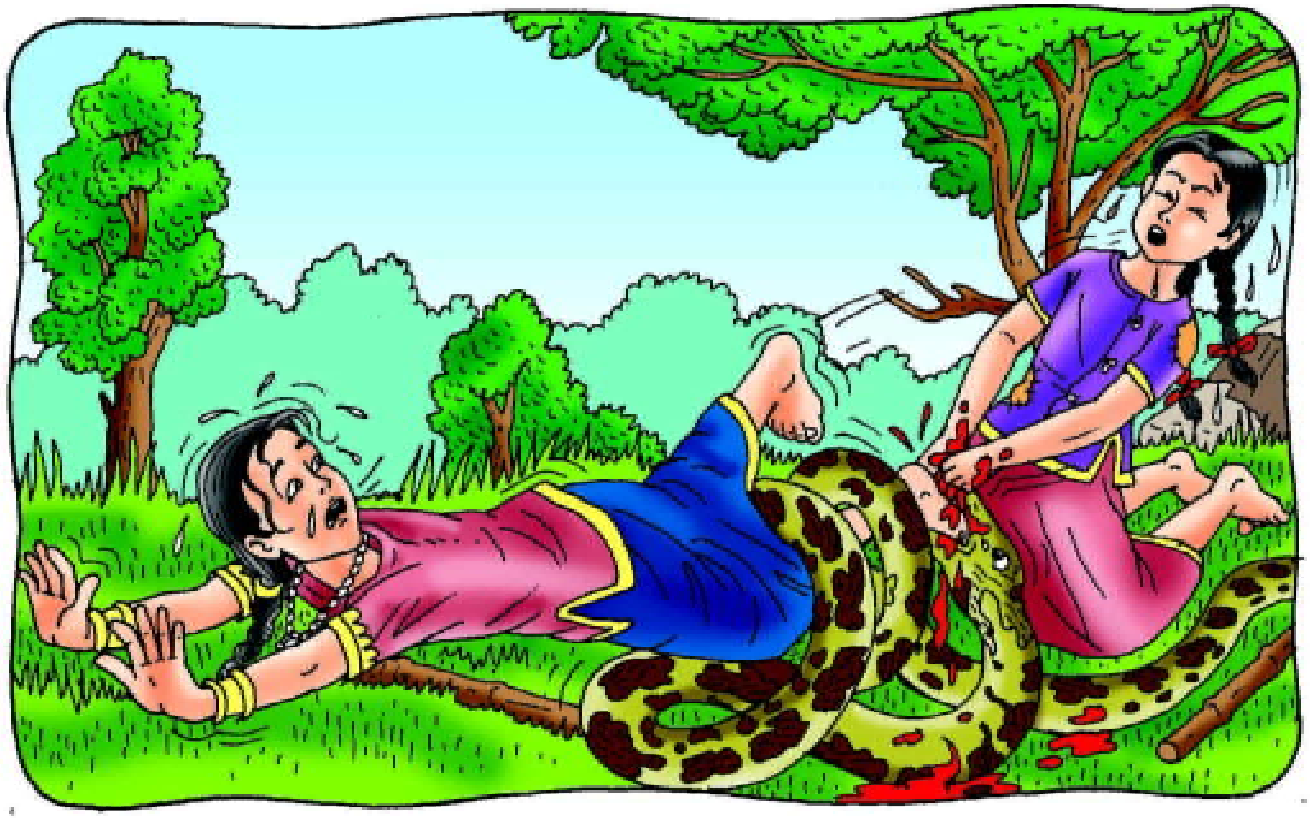

"मुझे इसका ज़हर चढ़ रहा है," निर्मला चिल्लाई।

"अरे यह अजगर है। इसके ज़हर नहीं होता," सयाल बोली।

"लेकिन मैं तो हिल ही नहीं सकती।"

"तुम डरी हुई हो। घबराओ मत...थोड़ा शांत रहो। मैं तुम्हारी मदद के लिए हूँ न।"

अब तक लाठी से काम नहीं बन रहा था, इसलिए सयाल ने अपने हाथों से इस दैत्य से लड़ने का निश्चय किया। उसने अजगर का मुँह पकड़ा और उसके जबड़े खोलने लगी।

निर्मला ने भी अपनी पीड़ा को सहने के लिए साहस बटोरा। वह **टकटकी लगाकर** सयाल को देख रही थी। सयाल ने दाँतों को भींच रखा था और अजगर के मुँह में हाथ डालकर उसके जबड़े फैलाने की पूरी कोशिश कर रही थी। उसके माथे से पसीना बह रहा था और हाथों से खून। निर्मला एक क्षण के लिए समझ ही नहीं पाई कि खून उसके पैर से बह रहा है या सयाल के हाथों से। साधारण-सी दिखने वाली सयाल की बहादुरी देखकर निर्मला हैरान थी। सयाल ने आखिर जबड़े फाड़ दिए। साँप गुस्से से बहुत छटपटाया।

एक क्षण के लिए लगा कि उसकी ताकत के सामने शायद सयाल न टिक सके। लेकिन जबड़े खुलते ही सयाल चिल्लाई, "अपना पैर निकाल, निर्मला...झटका दे...झटका दे।" उसने अजगर के जबड़ों को पूरी तरह खोले रखा। निर्मला ने उसके जबड़े से पैर तो मुक्त किया लेकिन कुंडली अभी भी कसी हुई थी। आखिर दोनों ने ज़ोर लगाया

शब्दार्थः टकटकी लगाना–लगातार एक तरफ़ देखना